IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान परिप्रेक्षय में संगीत शिक्षण का स्वरूप

पता: मनदीप सिंह, सहायक लैकचरर
डाँस विभाग, पंजाबी युनीवरसिटी, पटिआला।
संगरूर पंजाब-148001

Abstract:- मनुष्य का स्वभाव सदा ही परिर्वतनशील रहा है। मानवी विकास के अंन्तगत मनुष्य दिन-प्रतिदिन कुछ नवीन करने और खोजने में रूचित रहता है। कलायों में भी इस प्रकार का परिर्वतन आता रहा है। अगर संगीत कला की बात की जाए तो इसका मनुष्य के साथ गहरा स्मबन्ध है। वैदिक युग से लेकर वर्तमान युग तक संगीत शिक्षा में भी निरंतर परिर्वतन होते आ रहे है। प्राचीन काल में संगीत शिष्य केवल कुछ वर्गों तक ही सीमित था। औरतों को संगीत सिखने की अनुमति नहीं थी। संगीत शिक्षा हेतु लोगों के गुरूकुल में जाकर संगीतक गुरू के पास गुरूकुल में कई वर्षों तक रहना पड़ता था। गुरू जी पूर्ण दृढ़ता और मेहनत करने वाले शात्रों को ही संगीत की शिक्षा देते थे। उस समय गुरू मुख्य प्ररंपरा ही प्रचलित थी। शिक्षक द्वारा कोई प्रश्न पूछा जाना गुरू का अपमान समझा जाता था। समय के अन्तराल से 'घराना पद्धिती' का जन्म हुआ, इसके अंन्तगत अलग-अलग घरानों के उसताद कलाकार अपने शिक्षकों को अपने घरानें की अलग-अलग खूबिओं से अवगत करवाते थे, तांकि उस घराने का संगीतक प्रचार पूर्ण रूप से हो सके।

लेकिन स्वत्रंत्रता के बाद संगीत शिक्षण में इतना परिवर्तन आया है कि पिछले 50 वर्षों में इतना नहीं हुआ। आज अलग-अलग संचार माध्यमों, प्रिन्ट मीडिया, सोशल मीडिया, इंटरनेट, टी.वी. और दूरर्दशन के माध्यम से संगीत शिक्षण बिलकुल आसान हो गया है। संगीत को एक मुख्य और चपल विष्य के रूप में स्नातकोर से लेकर विश्वविद्यालयों तक के पाठयकर्म में शामिल कर दिया गया है। संगीत के श्रेत्र में निरंन्तर शोध कार्य हो रहे है। शिष्य की भिन्न-भिन्न पद्धितियों को प्रयोग में लाया जा रहा है। अगर पूर्ण रूप से

अवलोकन किया जाए तो 21वीं: सदी का यह समय यहा संगीत शिक्षण में एक महत्वपूर्ण कार्य निभा रहा है, वहीं दूसरी ओर संगीत केवल रोजगार का विष्य बनकर रह गया है। कलाकरों और उच्च कोटि के उस्तादों ने अपने आप को एक सीमित श्रेत्र में ही बाँध लिया है। आज के वर्तमान युग में संगीत शिक्षण का उदेश्य केवल मंच प्रस्तुति और धन संम्पत्ति तक सीमित हो गया है। अगर संगीत की इस अमुलय धरोहर को बचाना है तो हमें इन सभी कमियों का त्याग करना होगा तांकि संगीत शिक्षण और उचाँईयों को छू सके।

Key Words:- संगीत शिक्षण, विद्यालय वर्तमान, शिक्षक, शिक्षा

वर्तमान परिप्रेक्षय में संगीत शिक्षण का स्वरूप

शिक्षा का स्वरूप किसी भी राष्ट्र की विकास प्रकिया का अनुठा अंग होता है, जिस से उस की प्रष्ठभूमि में उस देश की कला, संस्कृति, धर्म, साहित्य आदि की चर्चा होती है। भारत देश एक ऐसा देश है जिसकी संस्कृति में 'एकता में अनेकता' समाई हुई है। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे महान और प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। शिक्षा एक ऐसा पहलू है, जो किसी भी देश की संस्कृति के साथ होना अनिवार्य है। शिक्षण के बिना कोई भी प्राणी अपने आप में पूर्ण नहीं माना जा सकता। शिक्षा के साथ हमारे बौद्धिक ज्ञान और व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि होती है।

जब हमारा राष्ट्र स्वतंत्र हुआ था तो इसका प्रभाव समाज के सभी क्षेत्रों पर पूर्ण रूप से पड़ा। इस परिवर्तन के दौर से भारतीय समाज का कोई भी पहलू अछूता ना रहा। स्वतंत्र होने के पश्चात शिक्षण एक ऐसा पहलू था, जो उस समय सबसे नीचले स्तर पर था। इसकी वजह से ही ब्रिटिश सामराज्य ने भारत पर 100 सालों तक अपनी धौंस जमाकर रखी। इसलिए स्वतंत्रा उपरांत ये भारतीय विचारकों के लिए प्रथम समस्या थी कि भारतीय शिक्षण के स्तर को किस तरह उच्च स्तर पर पहुँचाया जाए। इस समस्या का हल करने के लिए हमारे विचारकों ने समय-समय पर इस विष्य पर अपने शोध कार्य आरंम्भ किया। भारतीय संस्कृति में संगीत और संगीत शिक्षा दोनों ही विष्य विशेष रूप से अनिवार्य माने जाते है। अनेक प्रयोगों के बाद यह सिद्ध हुआ है कि संगीत का क्रियातमक पख भी उतना ही अनिवार्य है जितना शास्त्र पख। इस उदेश्य की प्राप्ति के लिए भारत में अलग-अलग स्थानों पर शिषण केंन्द्र स्थापित किए गए। प्राचीन काल में यहां संगीत का शिक्षण

गुरूकुल में दिया जाता था, वहीं यह वर्तमान काल से शिक्षण संस्थानों द्वारा किया जा रहा है। लेकिन संगीत की शिक्षा प्रणाली में उस तरह की बढ़त नहीं देखने को मिल रही जिस तरह की अन्य विष्यों में हो रही है।

जैसे कि हम सभी जानते है कि प्राचीन काल में संगीत का शिक्षण गुरू -शिष्य परंम्परा द्वारा दिया जाता था, वहीं यह मध्य काल में 'घराना परंम्परा' से होने लगा, और काल अन्तर में यह संगीत शिक्षण संस्थागत शिक्षण प्रणाली के माध्यम से प्रचलित हो रहा है।

संगीतक शिक्षण की प्रथम रूप-रेखाः- वर्तमान समय में शिक्षण प्रणाली का प्रचलन प्राथमिक, माध्यमिक और विश्वविद्यालय स्तर पर हो रहा है। संगीत शिक्षक के रूप में आम जनता से लेकर बड़े-बड़े संगीतक कलाकार आदि पूर्ण रूप से इसका लाभ उठा रहे है। कुछ निजी संगीत-शिक्षण-संस्थाएं भी इसमें अपना परस्पर योगदान दे रही है। इन्हीं संगीतक संस्थायों की वजह से आज संगीत का क्षेत्र बहुत विशाल हो गया है।

आज प्राथमिक स्तर पर संगीत शिक्षा का मुख्य उदेश्य के 'हाबी कलास है, परंन्तु चाहे उस में शास्त्रीय संगीत का समावेश न हो मगर संगीत के सरल तत्वों का समावेश अवश्य है। ज्यादातर संगीत सरकारी और गैरसरकारी विद्यालयों में तीसरी कक्षा से लेकर बाहरवीं कक्षा तक प्रचलित है। संगीत विष्य के रूप में इसमें 'चित्रकला' व 'नाटयकला' को संयुक्त रूप से रखा गया है। 'ग्याहरवीं' और बाहरवीं कक्षा के छात्र संगीत को एक ऐच्छिक शिष्य के रूप में चुन सकते है।

आम तौर पर ऐसा देखा गया है कि बच्चें संगीत विष्य को केवल अपने नंबर बढ़ाने हेतु उपयोग में लाते है, जो कि पूर्ण रूप से गलत बात है। कभी-कभी ऐसा भी देखा गया है कि संगीत शिक्षक को 'नाटय कला' और संगीत कला में से किसी एक विष्य पर ही जानकारी होती है। तो कोशिश यह होनी चाहिए कि अगर कोई विद्यालय संगीत शिक्षक की नयुक्ति करे तो उस शिक्षक का चयन करें जो दोनों विष्यों में परस्पर ज्ञान रखता है और दूसरा यह कि आप दोनों विष्यों के अलग-अलग शिक्षक नयुक्त कर सकते है, जिससे दोनों विष्यों को पूर्ण रूप से बढ़ने का अवसर मिले। ग्याहरवीं और बाहरवीं कक्षा में संगीत के दोनों पक्ष-गायन और वादन में से किसी एक का चयन विद्यार्थियों को करना पड़ता है। वादन में तबला और सितार वाद्य को चुना जा सकता है। एक और गंभीर बात यहां देखने को मिलती है कि स्कूलों में नृत्य विष्य पर कम ध्यान देखने को मिलता है। नृत्य विष्य का क्षेत्र बहुत विशाल है, इसमें नृत्य की सभी क्षेणियों का पूर्ण रूप से ज्ञान होना नृत्य शिक्षक के लिए अनीवार्य है।

विश्वविद्यालय स्तर पर संगीत शिक्षा की रूपरेखा:-

विश्वविद्यालय स्तर पर संगीत विष्य का प्रभाव कुछ ज्यादा अच्छा नहीं है। इस स्तर पर संगीत विष्य कई समस्याओं और कमियों से जूझ रहा है। सबसे पहली समस्या है कि विद्यार्थियों में गायन और वादन विष्य में बहुत से मतभेद देखने और सुनने को मिलते है। ज्यादातर विद्यार्थी वादन से ज्यादा गायन के विष्य को मुख्य रूप में चुनते है। यह मतभेद संगीत प्रेमियों और शिक्षकों में भी प्रचूर मात्रा में देखने को मिलता है। जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि विद्यार्थी संगीत को केवल एक नंबर बढ़ाने वाले विष्य के रूप में चुनते है, तो इस बात पर विशेष रूप से ध्यान करने की आवश्यक्ता है।

भारतीय संस्कृति को विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति माना गया है। इसका आरंम्भ वैदिक काल से हुआ है जो वर्तमान युग में भी निरंतर रूप से चल रहा है। प्राचीन समय से लेकर वर्तमान युग तक संगीत शिक्षण में हजारों परिवर्तन देखने को मिले है। वर्तमान समय में संगीत का स्तर प्राचीन समय से निचले स्तर पर आ गया है। प्राचीन समय में संगीत की शिक्षा लेने के लिए गुरू के पास कई.कई साल गुरूकुल में रहना पड़ता थाए तब पछचात एक विद्यार्थी अच्छी लगन और मेहनत से अच्छा कलाकार बन पाता था। मध्य काल में गुरू कुल का स्थान 'घराना परंम्परा' ने ले लिया। यहां पर संगीत प्रेमी और विद्यार्थी एक विशेष संगीतक घराने की शिक्षा पाने हेतु गुरूजनों के पास जाते है।

आजादी के बाद शैक्षिक क्रांति के कारण शिक्षण प्रणाली में बहुत ज्यादा बढ़ोतरी हुई है। मशीनी और विज्ञान युग ने अन्य पद्धतियों के साथ संगीत पर भी अपना प्रभाव डाला है। इस प्रभाव से गायन, वादन और नृत्य शौलियों में नवीनता का सुमेल देखने.सुनने को मिल रहा है। संगीत की प्राचीन विद्यायें अपने प्राचीन रूप और नाम के त्याग से नवीनतम रूप में हमारे सामने आ रही है। जैसे ध्रुपद .धमार एक प्राचीन गायन विद्या थी लेकिन वर्तमान समय में ख्याल गायन ने इसका स्थान हासिल कर लिया है। टप्पा, ठुमरी और दादरा आदि के गायक भी कम होते जा रहे है। अवनद्ध वाद्यों में से तबले ने सभी ताल वाद्यों में से प्रथम स्थान हासिल कर लिया है। कलाकार सिर्फ संगीत को ज्यादातर रोज़गारी प्राप्ति के साधन से अपना रहे है। मंच प्रर्दशन और धन्न की प्राप्ति ही उनका मुख्य उदेश्य बनकर रह गया है। उपाधियाँ संगीत. अध्यापन हेतु आज अनिवार्य बन गई है।

वर्तमान भारतीय संगीत के स्वरूप में पिछले 50 वर्षों में ज्यादा परिर्वतन दिखाई देने लगे है। स्वतंत्रा से पूर्व शास्त्रीय संगीत का प्रचलन ज्यादा था। संगीत सम्मेलनों में ज्यादातर शास्त्रीय संगीत के ही प्रोग्राम होते थे।[1] पश्चिमी युग के आगमन का प्रभाव संगीत शिक्षण में पूर्ण रूप से पड़ा। आधुनिक युग में संगीत की शिक्षा सामूहिक रीति से संस्थाओं में प्रवाहित हो रही है। इसी वजह से आज संगीत शिक्षण आम जनता में बृद्धि कर रहा है।

पं॰ विशणुनारायण भातखंड़े जी की अतथ मेहनत के स्वरूप भारतीय संगीत में प्रचार आरंभ हुआ। उन्होनें पूरे भारत की यात्रा कर संगीत के प्राचीन ग्रन्थों की खोज की। प्राचीन और अप्रचलित रागों के ध्रुपदए धमार और खयाल आदि का संग्रह करके उन्होंने संगीत शोध कार्य आरंभ किये। उनके समय संगीत शिक्षण पूर्ण रूप से निचले स्तर पर जा गिरा था। संगीत के शास्त्र और क्रियातमक पक्ष की बहुत कमी थी। अलग.अलग घरानों में रागों के संम्बंन्ध में अनेक मदभेद थे। संगीत शोध कार्य हेतु पं॰ भातखंडें जी ने संगीत संम्बंन्धित सामग्री का संक्लन करने उपरांत 60 के लगभग संगीतक ग्रंथों की रचना कीए जो के संगीत के शिक्षण में अतिअन्त महत्वपूर्ण साबित हुए।[2]

20वीः सताबदी के आरंभ में संस्थागत संगीत शिक्षण प्रणाली का आरंभ हुआ। पं॰ विशणु दिगंबर पलुस्कर जी ने संगीत संस्थानों की स्थापना कर इसे जन.साधारन तक पहुँचाया। 1901 में उन्होंने लाहौर में 'गंर्धव महाविद्यालय' की स्थापना की। उसके उपरान्त उन्होंने 1908 में दूसरी एक ब्रांच मुम्बई में स्थापित कर उसे संगीत शिक्षण का मुख्य केन्द्र बनाया।[3]

उपरोक्त दोनों युग्य पुरूषों की लगन से ओपचारिक शिक्षण संस्थाओं में संगीत शिक्षण का 'श्री गणेश' आरंभ हुआ। संगीत को स्कूलोंए कालेजों और विश्वविद्यालयों में एक च्यन विष्य के रूप में आरम्भ किया गया। निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार संगीत की शिक्षा आरम्भ हुई कुछ ही वर्षों में संगीत शिक्षण स्कूली स्तर से लेकर विश्वविद्यालयों तक फैल गया। इन संस्थायों में मिडल से लेकर पी॰एच॰डी॰ तक की संगीतक शिक्षा दी जाने लगी है। यह संगीत शिक्षण में एक महान क्रान्तिकारी परिर्वतन था। आज देश में ऐसे बहुत कम शिक्षा संस्थान बचे है यहां कम से कम स्नातक स्तर पर संगीत शिक्षण ना हो।

संगीत अब पहले की तरह कुछ लोगों तक सीमित नहीं रहा ए अब यह आम लोगों का प्रेरणा स्रोत बन चुका है। उत्तरी भारत में गंधर्व महाविद्यालय है ए जिसकी लगभग 300 शाखायें पूरे विश्व में है। इसके इलावा प्रयाग संगीत ए इलाहाबाद ए भारतखन्ड़े संगीत विद्यालय लखनऊ प्राचीन कला केन्द्र चंण्डीगढ़ आदि। जो प्रति वर्ष संगीत की बहु स्तरीय परीक्षाएं लेकर उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र देते है। इनके इलावा इंदरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ और आई ण्सी ण्टी ण रिसर्च अकादमी कोलकत्ता संगीत शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे है।

ऐसे संगीत विद्यालयों की स्थापना से उन संगीतक प्रेमीयों को बहुत लाभ हुआ है जो स्कूलए कालेज या किसी अन्य संगीतक गुरू के पास जाकर संगीत शिक्षण में आस्मर्थ थे। इसके इलावा देश में बहुत सारे कार्यक्रम संगीत के विष्य में किये जाते है। जैसे. हरिभल्भ संगीत सम्मेलनए ;जालंधरद्धए स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन ;मुम्बईद्धए तानसेन संगीत समारोह ;गवालीयरद्धए अखिल भारतीय भास्कर राव संगीत और नृत्य सम्मेलन ;चंडीगढ़द्ध गुरू पूर्णिमा संगीत स्मारोह ;मैहरद्ध आदि। ये सभी सम्मेलन संगीत को नई दिशायों की ओर लेकर जाने में पूर्ण रूप से अपनी भागीदारी निभा रहे हैं। प्रथम वर्ष से पंजाब सरकार के प्रयत्नों से पटियाला हैरीटेज़ मेला और अमृतसर हैरिटेज़ मेला भी संगीत के प्रचार.प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

भारत के इलावा बहुत सारे विदेशों में भी संगीत शिक्षण का कार्य प्रारंभिक रूप से चल रहा है। भारतीय कलाकार अलग.अलग विदेशों जैसे यूरोपए कनाडाए इग्लैड़ए अफ्रिकाए फ्रांसए इटलीए बंगलादेशए स्वीजरलैड़ और अन्य बहुत सारे विदेशों में संगीतक डैलीगेटस के माध्यम से वहाँ की जनता को भारतीय संगीतक संस्कृति से अवगत कराते रहते है। यह कार्य संगीत शिक्षण में एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य संम्पन्न हुआ है।

20वीः सदी के तीसरे दशक में युग परिवर्तन से 23 जुलाईए 1923 को बम्बई में 'रेडियों स्टेशन' का आरम्भ हुआ। 130 तक नियमित रूप से इसका प्रसारण किया जाने लगा। स्वतंत्रा उपरान्त देश के विभिन्न भागों में इसके केन्द्र बनाए गए। जिसमें संगीत और संगीत से संम्बंधित कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाने लगा। संगीत शिक्षण के हेतु आकशवाणी द्वारा किए जाने वाले वाले प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैः.

- शास्त्रीय संगीत का प्रचार और प्रसार।
- संगीतक सम्मेलन।
- रेडियों संगीत सम्मेलन।
- भारतीय संगीत पर चर्चा।
- आल इंडिया रेडियो की संगीतक प्रतियोगताए।
- अखिल भारतीय संगीत कार्यक्रम।
- शास्त्रीय संगीत का दैनिक प्रसारण।[4]

2 अक्तूबरए 1976 को मुम्बई में टैलिविजन सैन्टर का उदघाटन हुआ। जिसको 'दूरदर्शन' का नाम दिया गया। इस आरम्भ से संगीत शिक्षण में तेज़ी से बढ़ोतरी होनी लगी।

उपरोक्त सबसे ज्यादा संगीत नाटक अकादमी ने संगीत शिक्षण के स्तर को पूर्ण रूप से बढ़ावा दिया है। सब 1952 में संगीतए नाटय् और अन्य कलायों के संन्दर्भ में इसकी स्थापना राजधानी दिल्ली में हुई थी।[5] इसका मुख्य काम संगीत का प्रचार और प्रसार करना है और संगीत के क्षेत्र में गौरवपूर्ण कार्य करने वाले कलाकारों के 'संगीत नाटक अकादमी' पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है।

अगर देखा जाए तो वर्तमान समय में संगीत शिक्षण पूर्ण से अपनी मंजिल की ओर बढ़ता चला हुआ प्रतीत होता हैए लेकिन इसमें आज भी बहुत सारी ऐसी कमियां है जिनके हल निकालने के बाद संगीत में एक और क्रांन्ति को लाया जा सकता है।

निष्कर्षः. संगीत के उपरोक्त कार्यों का अवलोक्न करने के बाद हम यह पूर्ण रूप से कह सकते है कि संगीत का संम्बंन्ध मनुष्य के जीवन काल से लेकर मृत्यु काल तक पूर्ण रूप से चलता है। वैदिक काल के सामगान से लेकर वर्तमान काल के पी॰एचण्डी॰ आदि शोध कार्य तक संगीत शिक्षण अपने एक अलग ही क्षेत्र में बड़ी तेजी से पनप रहा है। यहाँ एक ओर इस संगीतक क्रांन्ति के कारण संगीत के प्रचार.प्रसार में लगातार बृद्धि हो रही है तो दूसरी ओर आम लोग भी संगीत शिक्षण के क्षेत्र में अपनी रूचि प्रकट करने लगे है। भिन्न. भिन्न संचार माध्यमों की सहायता से संगीत शिक्षण में बढ़ोतरी हो रही है।

वर्तमान समय में संगीत सीखने वालों की संख्या दिन.व.दिन बढ़ती चली जा रही है। देखा जाए तो आज संगीत के क्षेत्र में रूचि रखने वाले विद्यार्थी दसवीं और बाहरवीं के बाद ग्रेजुएशन और उच्च स्तरीय कक्षा में संगीत विष्य के साथ नामंकन कर रहे है। संगीत के औपचारिक प्रशिक्षण में संगीत सिद्धांतए व्याख्याए इतिहासए रचनाए निर्देशन समीक्षणए संचालन क्रिया एवं शास्त्र पख शामिल है। देश के कई महाविद्यालयोंए विश्वविद्यालयों में संगीत का

स्नातकए परसस्नातक डिग्री कराना संगीत की उन्नति का प्रमाण है। वर्तमान युग में संचार माध्यमों से विद्यार्थी पूर्ण रूप से संगीत शिक्षण का आनंन्द अपने घर पर बैठ कर इन्टरनेट और टी॰वी॰ के माध्यम से खूब उठा रहे है। उनका शबावनी ने एक पूरा खण्ड पश्चिमी शास्त्रीय संगीत को समर्पित कर दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1॰ शास्त्रीय संगीत विवेचनए शंकर लाल मिश्राए अलका क्यालए पन्ना.87ए पबलीकेशन पंजाबी यूनीर्वसिटी पटियाला।

2॰ संगीत रूपए भाग.3ए डा॰ देविन्द्र कौरए संगीताजली पब्लीकेशनज पटियालाए पन्ना.27।

3॰ वहीए पन्ना.29

4॰ संगीत रूपए भाग.3ए डा॰ देविन्द्र कौरए संगीताजली पब्लीकेशनज पटियालाए पन्ना.33

5॰ संगीत रूपए भाग.3ए पन्ना.32

6. संगीत शिक्षय के विविध आयाम, डा॰ कुमार श्रषितोष, पन्ना-43ए कीनषक पब्लिकेशन, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली